भारत में संसदीय संस्कृति का सृजनात्मक स्वरूप: एक अध्ययन

पारस नाथ सिंह'

संसदीय संस्कृति का उद्भव और विकास दलीय राजनीति में होता है। दलीय राजनीति एक ऐसा साँचा है जिसमें ढलकर संसदीय संस्कृति अपना आकार एवं स्वरूप ग्रहण करती हैं तथा अपने विकास की दिशा निर्धारित करती है। दलीय राजनीति के संदर्भ में राजनीतिक दलों एवं दल के सदस्यों की जैसी गतिविधियाँ होती है, उनका जैसा राजनीतिक और सामाजिक चरित्र होता है, जैसा राजनीतिक व्यवहार होता है, समस्याओं से निपटने की जैसी शैली होती है उसी के अनुरूप संसदीय संस्कृति निर्मित होती है, मुखर होती है तथा विकसित होती है। यदि राजनीतिक दलों के भीतर एवं दलों के बीच की राजनीति संसदीय मूल्यों एवं

संवैधनिक अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं है तो संसदीय संस्थाएँ व्यक्ति विशेष या समुदाय विशेष की महत्वाकांक्षाओं के अनुरूप कार्य करने लगती है।